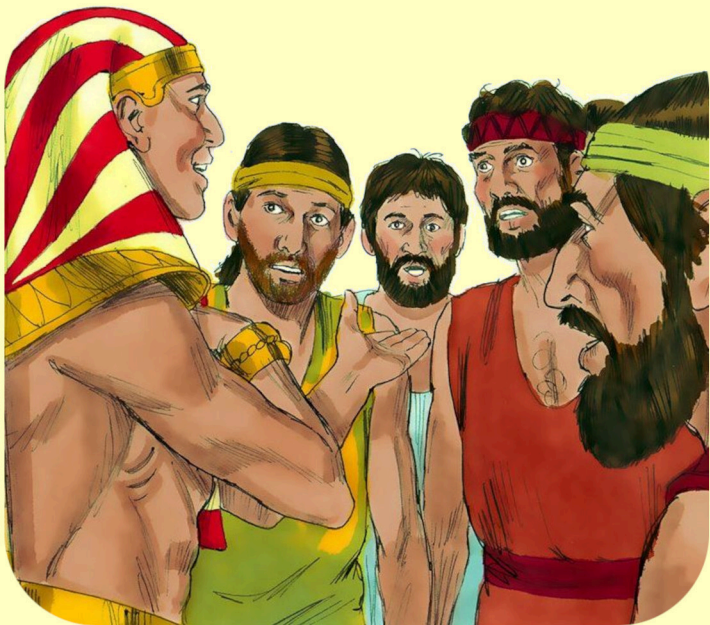


हज़रत यूसुफ़

और उन के भाई



hazrat yūsuf aur un ke bhāī

Hazrat Yusuf and His Brothers

(Urdu—Hindi script)

© 2022 Chashma Media.

published and printed by

Good Word Communication Services Pvt. Ltd.

New Delhi, INDIA

Bible text is from UGV.

illus.: Jim Padgett (<https://sweetpublishing.com>)

for enquiries or to request more copies:

askandanswer786@gmail.com

हज़रत इब्राहीम का एक बेटा था—इसहाक़। इसहाक़ के दो बेटे थे। इनमें से एक याक़ूब था जिसके 12 बेटे पैदा हुए। इनमें से एक यूसुफ़ था। यूसुफ़ की दिलचस्प कहानी तौरात में लिखा है :

यूसुफ़ के ख़ाब

याक़ूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ पहले उसका बाप भी परदेसी था। उस वक़्त याक़ूब का बेटा यूसुफ़ 17 साल का था। वह अपने भाइयों के साथ भेड़-बकरियों की देख-भाल करता था। यूसुफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इत्तला दिया करता था।



याक़ूब यूसुफ़ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। इसलिए याक़ूब ने उसके लिए एक ख़ास रंगदार लिबास बनवाया। जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यूसुफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार

करता है तो वह उससे नफ़रत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे।



एक रात यूसुफ़ ने ख़ाब देखा। जब उसने अपने भाइयों को ख़ाब सुनाया तो वह उससे और भी नफ़रत करने लगे। उसने कहा, “सुनो, मैंने ख़ाब देखा। हम सब खेत में पूले बाँध

रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द जमा होकर उसके सामने झुक गए।”

उसके भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बनकर हम पर हुकूमत करेगा?” उसके ख़ाबों और उसकी बातों के सबब से उनकी उससे नफ़रत मज़ीद बढ़ गई।

कुछ देर के बाद यूसुफ़ ने एक और ख़ाब देखा। उसने अपने भाइयों से कहा, “मैंने एक और ख़ाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” उसने यह ख़ाब अपने बाप को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा।



उसने कहा, “यह कैसा ख़ाब है जो तूने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” नतीजे में उसके भाई उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप ने दिल में यह बात महफूज़ रखी।

यूसुफ़ को बेचा जाता है

एक दिन जब यूसुफ़ के भाई अपने बाप के रेवड़ चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे तो याक़ूब ने यूसुफ़ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवड़ों को चरा रहे हैं। जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड़ ख़ैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।” यह सुनकर यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे चला गया।

जब यूसुफ़ अभी दूर से नज़र आया तो उसके भाइयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। उन्होंने कहा, “देखो, ख़ाब देखनेवाला आ रहा है।



आओ, हम उसे मार डालें और उसकी लाश किसी गढ़े में फेंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। फिर पता चलेगा कि उसके ख़ाबों की क्या हक़ीक़त है।”

ज्योंही यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर यूसुफ़ को गढ़े में फेंक दिया। गढ़ा ख़ाली था, उसमें पानी नहीं था। फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए।



अचानक इसमाईलियों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। वह मिसर जा रहे थे। चुनाँचे जब ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ़ को खींचकर गढ़े से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे लेकर मिसर चले गए।

तब उन्होंने बकरा ज़बह करके यूसुफ़ का लिबास उसके ख़ून में डुबोया, फिर रंगदार लिबास इस ख़बर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे ग़ौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो नहीं?”

याकूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खाया है। यक्रीनन यूसुफ़ को फाड़ दिया गया है।” याकूब ने ग़म के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढ़कर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा।



इसमाईलियों ने यूसुफ़ को मिसर ले जाकर बेच दिया था। मिसर के बादशाह के एक आला अफ़सर बनाम फ़ूतीफ़ार ने उसे ख़रीद लिया। रब यूसुफ़ के साथ था। जो भी काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने मिसरी मालिक के घर में रहता था जिसने देखा कि रब यूसुफ़ के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी देता है। चुनाँचे फ़ूतीफ़ार ने उसे अपने घराने के इंतज़ाम पर मुक़रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपुर्द कर दी। जिस वक़्त से फ़ूतीफ़ार ने अपने घराने का इंतज़ाम और पूरी मिलकियत यूसुफ़ के सुपुर्द की उस वक़्त से रब ने फ़ूतीफ़ार को यूसुफ़ के सबब से बरकत दी। उसकी बरकत फ़ूतीफ़ार की हर चीज़ पर थी।



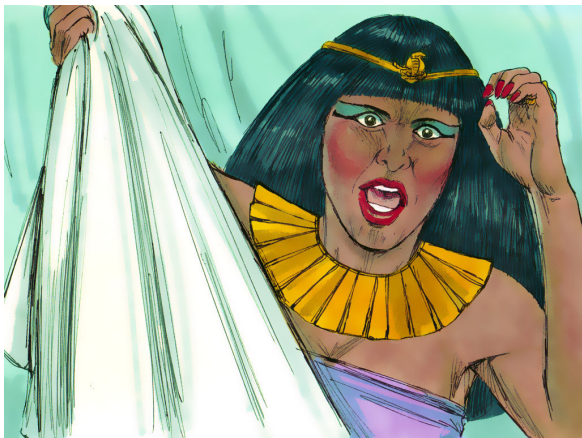
यूसुफ़ और फ़ूतीफ़ार की बीवी

यूसुफ़ निहायत खूबसूरत आदमी था। कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!”

यूसुफ़ इनकार करके कहने लगा, “मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

मालिक की बीवी रोज़ बरोज़ यूसुफ़ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इनकार करता रहा।

एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। फ़ूतीफ़ार की बीवी ने यूसुफ़ का लिबास पकड़कर कहा, “मेरे

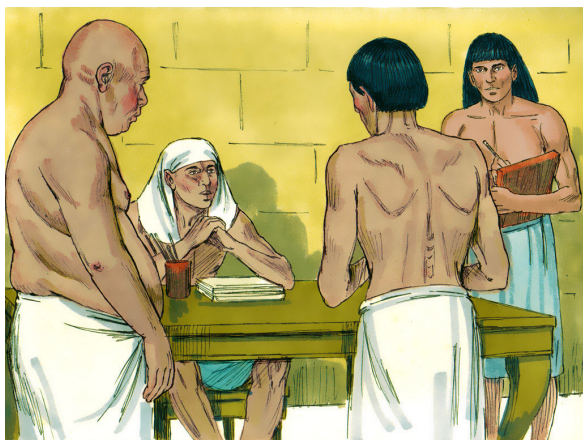


साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ़ भागकर बाहर चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। उसने मालिक के आने तक यूसुफ़ का लिबास अपने पास रखा। जब वह घर वापस आया तो उसने कहा, “यह इबरानी गुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तज़लील के लिए मेरे पास आया। लेकिन जब मैं मदद के लिए चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।”

यूसुफ़ कैदखाने में

यह सुनकर फ़ूतीफ़ार बड़े गुस्से में आ गया। उसने यूसुफ़ को गिरिफ़्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के कैदी रखे जाते थे। वहीं

वह रहा। लेकिन रब यूसुफ़ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे कैदखाने के दारोगे की नज़र में मक़बूल किया। यूसुफ़ यहाँ तक मक़बूल हुआ कि दारोगे ने तमाम कैदियों को उसके सुपुर्द करके उसे पूरा इंतज़ाम चलाने की ज़िम्मेदारी दी। दारोगे को किसी भी मामले की फ़िकर न रही, क्योंकि रब यूसुफ़ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख़्शी।



दो कैदियों के ख़ाब

कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिसर के बादशाह के सरदार साक़ी और बेकरी के इंचार्ज ने अपने मालिक का गुनाह किया। फ़िरौन को दोनों

अफ़सरों पर गुस्सा आ गया। उसने उन्हें कैदखाने में डाल दिया जिसमें यूसुफ़ था। वहाँ वह काफ़ी देर तक रहे।

एक रात दोनों ने ख़ाब देखा। जब यूसुफ़ सुबह के वक़्त उनके पास आया तो वह दबे हुए नज़र आए। उसने उनसे पूछा, “आज आप क्यों इतने परेशान हैं?”



उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने ख़ाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।”

यूसुफ़ ने कहा, “ख़ाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। ज़रा मुझे अपने ख़ाब तो सुनाएँ।”

जब सरदार साक़ी ने अपना ख़ाब सुनाया तो यूसुफ़ ने कहा, “तीन दिन के बाद फ़िरौन आपको बहाल कर लेगा। आपको पहली ज़िम्मेदारी वापस मिल जाएगी। लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा ख़याल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा ज़िक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। क्योंकि मुझे इब्रानियों के मुल्क से इशवा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे कोई ऐसी ग़लती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फेंका जाता।”

तब शाही बेकरी के इंचार्ज ने अपना ख़ाब सुनाया। लेकिन यूसुफ़ ने अफ़सोस से कहा, “तीन दिन के बाद ही फ़िरौन आपको क़ैदख़ाने से निकालकर दरख़्त से लटका देगा।”



और ऐसा ही हुआ। तीन दिन के बाद बादशाह ने सरदार साक़ी को पहलेवाली ज़िम्मेदारी दी। लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख़्त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ़ ने कहा था। लेकिन सरदार साक़ी ने यूसुफ़ का ख़याल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।



बादशाह के ख़ाब

दो साल गुज़र गए। एक रात बादशाह ने ख़ाब देखा। वह दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। अचानक दरिया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। उनके बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं, और वह पहली सात ख़ूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह जाग उठा। फिर वह दुबारा सो गया। इस दफ़ा उसने एक और ख़ाब देखा। अनाज के एक पौधे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिक्की हवा से झुलसी हुई थीं। अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और ख़ूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फ़िरौन जाग उठा।



सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उसने उन्हें अपने ख़ाब सुनाए, लेकिन कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

फिर सरदार साक्री को यूसुफ़ याद आया। उसने फ़िरौन को बताया कि जब मैं बेकरी के इंचार्ज के साथ जेल में था तो हम दोनों ने ख़ाब देखे। वहाँ एक नौजवान बनाम यूसुफ़ था जिसने हमें उनका मतलब बता दिया। और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ।

यह सुनकर फ़िरौन ने यूसुफ़ को बुलाया, और उसे जल्दी से कैदख़ाने से लाया गया। बादशाह ने कहा, “मैंने ख़ाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उसकी ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू ख़ाब को सुनकर उसका मतलब बता सकता है।”



यूसुफ़ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख़्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैग़ाम देगा।”

तब फ़िरौन ने अपने ख़ाब सुनाए।

यूसुफ़ ने बादशाह से कहा, “दोनों ख़ाबों का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने ज़ाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। सात साल आएँगे जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कसरत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतज़ाम सौंपें। इसके अलावा वह ऐसे आदमी मुक्रर कर दें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा लें। वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख्तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बनाकर अनाज को महफूज़ कर लें। यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए मख़सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों मुल्क तबाह नहीं होगा।”

यूसुफ़ को मिसर पर हाकिम मुक्रर किया जाता है

यह मनसूबा बादशाह और उसके अफ़सरान को अच्छा लगा। उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ़ से ज़्यादा लायक़ आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रूह है।”

बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझ पर ज़ाहिर किया है, इसलिए कोई भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। मैं तुझे अपने महल पर मुक्रर करता हूँ। मेरी तमाम रियाया तेरे ताबे



रहेगी। तेरा इख्तियार सिर्फ मेरे इख्तियार से कम होगा। अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुकर्रर करता हूँ।”

सब कुछ वैसा हुआ जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया था। सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। यूसुफ़ ने तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफ़ूज़ कर ली। हर शहर में उसने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफ़ूज़ रखी।



फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ़ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर में वाफ़िर



खुराक पाई जाती थी। जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ़ ने अनाज के गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत ख़राब हो गए थे। तमाम ममालिक से भी लोग अनाज ख़रीदने के लिए यूसुफ़ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख़्त काल की गिरिफ़्त में थी।

यूसुफ़ के भाई मिसर में

जब याक़ूब को मालूम हुआ कि मिसर में अनाज है तो उसने अपने बेटों से कहा, “तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो? सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे लिए कुछ ख़रीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।” तब यूसुफ़ के दस भाई अनाज ख़रीदने के लिए मिसर



गए। लेकिन याकूब ने यूसुफ़ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुक़सान पहुँचे।”

यूसुफ़ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। गो यूसुफ़ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। उसे वह ख़ाब याद आए जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, “तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर ग़ैरमहफ़ूज़ है।”

उन्होंने कहा, “जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके गुलाम ग़ल्ला ख़रीदने आए हैं। आपके ख़ादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे



हैं जो कनान में रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।”

लेकिन यूसुफ़ ने अपना इलज़ाम दोहराया, “ऐसा ही है जैसा मैंने कहा है कि तुम जासूस हो। मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फ़िरौन की हयात की क़सम, पहले तुम्हारा सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे।”

यह कहकर यूसुफ़ ने उन्हें तीन दिन के लिए कैदखाने में डाल दिया। तीसरे दिन उसने उनसे कहा, “मैं अल्लाह का ख़ौफ़ मानता हूँ, इसलिए तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। तुममें से एक यहाँ कैदखाने में रहे जबकि बाक़ी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास

ले आओ। सिर्फ़ इससे तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।”



यूसुफ़ के भाई आपस में कहने लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर जुल्म की सज़ा है। जब वह इल्तिजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उसकी बड़ी मुसीबत

देखकर भी उसकी न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।” उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ़ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की मारिफ़त उनसे बात करता था। यह बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमाऊन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

यूसुफ़ के भाई कनान वापस जाते हैं

यूसुफ़ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उसकी बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। फिर यूसुफ़ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर रवाना हो गए। मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ था।

लेकिन जब उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई है। यह पैसे देखकर वह खुद और उनका बाप डर गए।



उनके बाप ने उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ नहीं रहा, शमाऊन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे खिलाफ़ है।”

बिनयमीन के हमराह दूसरा सफ़र

काल ने ज़ोर पकड़ा। जब मिसर से लाया गया अनाज ख़त्म हो गया तो याकूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और ग़ल्ला ख़रीद लाओ।”

लेकिन यहूदाह ने कहा, “उस मर्द ने सख़्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ़ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’ अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए ग़ल्ला ख़रीदेंगे वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ़ इस सूरत में उसके पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।”

तब उनके बाप ने कहा, “अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफे के तौर पर लेकर उस आदमी को दे दो। अपने साथ दुगुनी रकम लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से गलती हुई हो। अपने भाई को लेकर सीधे वापस पहुँचना। अल्लाह कादिरे-मुतलक करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, अगर मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।”

जब यूसुफ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को ज़बह करके खाना तैयार करो।”

जब उन्हें उसके घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे, “हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफ़ा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें गुलाम बना लेंगे।”

इसलिए घर के दरवाज़े पर पहुँचकर उन्होंने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से बात करके पैसे वापस देने की कोशिश की। लेकिन मुलाज़िम ने कहा, “फ़िकर न करें। आपके और आपके बाप के ख़ुदा ने आपके लिए

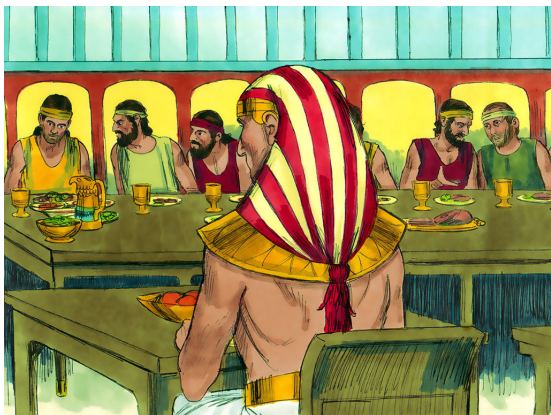


आपकी बोरियों में यह खज़ाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।”

मुलाज़िम शमाऊन को उनके पास बाहर ले आया। फिर उसने भाइयों को यूसुफ़ के घर में ले जाकर उन्हें पाँव धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया। उन्होंने अपने तोहफ़े तैयार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, “यूसुफ़ दोपहर का खाना आपके साथ ही खाएगा।”

जब यूसुफ़ घर पहुँचा तो वह अपने तोहफ़े लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक गए। उसने उनसे खैरियत दरियाफ़्त की और फिर कहा, “तुमने अपने बूढ़े बाप का ज़िक्र किया। क्या वह ठीक हैं? क्या वह अब तक ज़िंदा हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “जी, आपके खादिम हमारे बाप अब तक ज़िंदा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।



जब यूसुफ़ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, “क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने ज़िक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।” यूसुफ़ अपने भाई को देखकर इतना मुतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर क़ाबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ। नौकरों ने उन्हें यूसुफ़ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच

गुना ज़्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ़ के साथ जी भरकर खाया और पिया।

गुमशुदा प्याला

यूसुफ़ ने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ ख़ुराक से उतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उसकी अपनी बोरी के मुँह में रख देना। सबसे छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उनके गधों समेत रुख़सत कर दिया गया। वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ़ ने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उनके पास पहुँचकर यह पूछना, ‘आपने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यों किया है? आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है? उससे वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन जुर्म के मुरतकिब हुए हैं’।”

जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने उनसे यही बातें कीं। जवाब में उन्होंने कहा, “हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आपके ख़ादिम ऐसा करें। आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो

फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? अगर वह आपके खादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाक़ी सब आपके गुलाम बनें।”



मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा गुलाम बनेगा जिसने प्याला चुराया है। बाक़ी सब आज़ाद हैं।” उन्होंने जल्दी से अपनी बोरियाँ उतारकर ज़मीन

पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके आख़िरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। भाइयों ने यह देखकर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।

जब यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह के बल गिर गए। यूसुफ़ ने कहा, “यह तुमने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?”



यहूदाह ने कहा, “जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ्ता में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें कुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके गुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिसके पास से प्याला मिल गया।”

यूसुफ़ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा गुलाम होगा जिसके पास प्याला था। बाक़ी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

यहूदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

लेकिन यहूदाह ने यूसुफ़ के क़रीब आकर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे को एक बात करने की इजाज़त दें। अगर मैं अपने बाप

के पास जाऊँ और वह देखें कि लड़का मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी ज़िंदगी इस क्रूर लड़के की ज़िंदगी पर मुनहसिर है और वह इतने बूढ़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें क्रूर तक पहुँचा देंगे। न सिर्फ़ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, 'मैं खुद इसका ज़ामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं ज़िंदगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा।' अब अपने ख़ादिम की गुज़ारिश सुनें। मैं यहाँ रहकर इस लड़के की जगह गुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए।



यूसुफ़ अपने आपको ज़ाहिर करता है

यह सुनकर यूसुफ़ अपने आप पर क़ाबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ़ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। वह इतने ज़ोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उसकी आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को पता चल गया। यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िंदा है?”

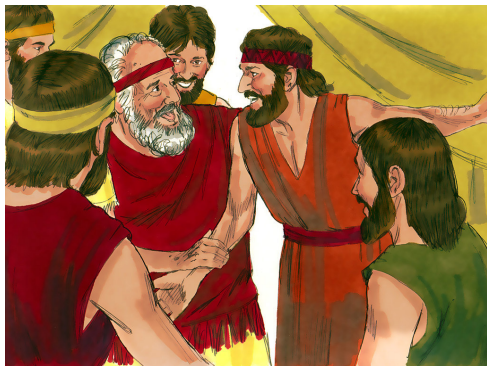
लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

फिर यूसुफ़ ने कहा, “मेरे क़रीब आओ।” वह क़रीब आए तो उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ जिसे तुमने बेचकर मिसर भिजवाया। अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ़ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने खुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। चुनाँचे तुमने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे फ़िरौन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक और मिसर का हाकिम बना दिया है। अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो,

‘आपका बेटा यूसुफ़ आपको इत्तला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। आप जुशन के इलाक़े में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे करीब होंगे, आप, आपकी आल-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। वहाँ मैं आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेँगे। वरना आप, आपके घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएँगे।’”



यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोने लगा। फिर यूसुफ़ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके भाई उसके साथ बातें करने लगे।



तब वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचे। उन्होंने उससे कहा, “यूसुफ़ ज़िंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।” लेकिन याकूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि उसे यक्वीन न आया। ताहम उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो यूसुफ़ ने उनसे कहा था, और उसने खुद वह गाड़ियाँ देखीं जो यूसुफ़ ने उसे मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याकूब की जान में जान आ गई, और उसने कहा, “मेरा बेटा यूसुफ़ ज़िंदा है! यही काफ़ी है। मरने से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।”

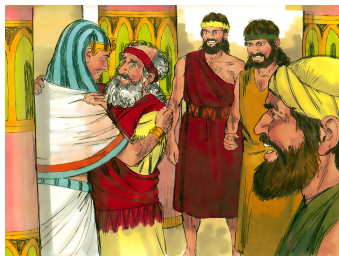
याकूब मिसर जाता है

याकूब सब कुछ लेकर रवाना हुआ। मिसर पहुँचकर याकूब ने यहूदाह को अपने आगे यूसुफ़ के पास भेजा ताकि वह जुशन में उनसे मिले।



जब वह वहाँ पहुँचे तो यूसुफ अपने रथ पर सवार होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफ़ी देर रोता रहा। याक़ूब ने यूसुफ से कहा, “अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने खुद देखा है कि तू ज़िंदा है।”

बादशाह ने यूसुफ से कहा, “तेरा बाप और भाई तेरे पास आ गए हैं। मुल्के-मिसर तेरे सामने खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन में रहें। और अगर उनमें



से कुछ हैं जो खास क्राबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की निगहदाशत पर रख।”



फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक मुहैया करता रहा। हर ख़ानदान को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

याकूब का इंतक़ाल

फिर याकूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, “अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के सात दफ़नाना।” इन हिदायत के बाद याकूब ने अपने पाँव बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़कर अपने बापदादा से जा मिला।

याकूब को दफ़न किया जाता है

चुनाँचे यूसुफ़ अपने बाप को दफ़नाने के लिए कनान रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुजुर्ग और पूरे मिसर के बुजुर्ग उसके साथ थे। यूसुफ़ के घराने के अफ़राद, उसके भाई और उसके बाप के घराने के लोग भी साथ गए। यों याकूब के बेटों ने अपने बाप का हुक्म पूरा किया। इसके बाद यूसुफ़, उसके भाई और बाक़ी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिसर को लौट आए।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

तब यूसुफ़ के भाई डर गए। उन्होंने कहा, “ख़तरा है कि अब यूसुफ़ हमारा ताक़्क़ुब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर क्या होगा?” यह सोचकर उन्होंने यूसुफ़ को ख़बर भेजी, “आपके बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी कि यूसुफ़ को बताना, ‘अपने भाइयों के उस ग़लत काम को माफ़ कर देना जो उन्होंने

तुम्हारे साथ किया।' अब हमें जो आपके बाप के ख़ुदा के पैरोकार हैं माफ़ कर दें।”



यह ख़बर सुनकर यूसुफ़ रो पड़ा। फिर उसके भाई ख़ुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने कहा, “हम आपके ख़ादिम हैं।”

लेकिन यूसुफ़ ने कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। चुनाँचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।”

यों यूसुफ़ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी से बात की।

यूसुफ़ अपने भाइयों को तसल्ली देता है / 33



मिसर में रहते हुए यूसुफ और उसके भाइयों के बहुत बच्चे पैदा हुए। होते होते उनकी औलाद फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताक़तवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया। अल्लाह तआला ने इब्राहीम से अपना वादा पूरा किया था कि मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा।

सवाल

- जब यूसुफ़ के भाई मिसर आए तो क्या यूसुफ़ ने उनसे बदला लिया?
 - ▶ नहीं।
- क्यों नहीं?
 - ▶ गो उन्होंने उसे बहुत दुख पहुँचाया था लेकिन यूसुफ़ को यह तजरिबा हुआ था कि

ख़ुदा मेरे बारे में नेक इरादा रखता है।

गो दूसरे मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा रखें, लेकिन अल्लाह इससे भलाई पैदा करता है।

- इस तजरिबे ने यूसुफ़ को ख़ुदा के बारे में क्या सिखाया?
 - ▶ इस तजरिबे ने उसे सिखाया कि तू अल्लाह पर पूरा भरोसा रख सकता है, चाहे वक़्त अच्छा हो या बुरा। और चूँकि ख़ुदा उसके बारे में अच्छा इरादा रखता था इसलिए यूसुफ़ अपने भाइयों को माफ़ करके कह सकता था कि

तुमने मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं।

● क्या अल्लाह हमारे बारे में नेक या बुरा इरादा रखता है?

- अल्लाह हमारे बारे में भी नेक इरादा रखता है। वह हमें अबदी ज़िंदगी और अपने साथ रिफ़ाक़त बख़्शाना चाहता है। क़दीम ज़माने के नबी भी जानते थे कि अल्लाह हमारे बारे में अच्छा इरादा रखता है, गो कभी-कभार हमारी ज़िंदगी मुश्किल होती है। ऐन उस वक़्त जब हमें दिक्क़त और तकलीफ़ महसूस होती है अल्लाह हमें तसल्ली देता है। वह हमें तक़वियत देकर हमारी मदद करता है। यों यसायाह नबी फ़रमाता है,

रब्बुल-अफ़वाज [...] ज़बरदस्त मशवरों और कामिल हिकमत का मंबा है।
(यसायाह 28:29)

बाद में पौलुस रसूल फ़रमाते हैं,

हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं
उनके लिए सब कुछ मिलकर भलाई का बाइस बनता है,
उनके लिए जो उसके इरादे के मुताबिक़ बुलाए गए हैं। (रोमियों 8:28)

आइए हम रोज़ बरोज़ अपने आपको इस अज़ीम ख़ुदा के सुपुर्द करें।

जो तौरत में तफ़सील से यूसुफ़ और उसके भाइयों के बारे में पढ़ना चाहे वह पैदाइश 37 और 39 – 50 में पढ़े।